DAILY ASSAM

चतुर्थ अध्याय

पद-विवेचन

पद

लड़का—घर—पर

ऊपर तीनों इकाइयाँ पद नहीं कही जा सकतीं, क्योंकि वे एक वाक्य में नहीं हैं, किंतु —'लड़का घर पर है।' यह एक पूर्ण वाक्य है और इसकी प्रत्येक इकाई पद या रूप है।

''वाक्य में प्रयुक्त शब्द जो व्याकरणिक नियमों की सीमा में हों, उन्हें पद कहते हैं।''

पदांतर

पद में जब अंतर, परिवर्तन या विकार होते हैं, तब उसे पदांतर, रूपांतर या पद-विकार कहा जाता है। अर्थ प्रकट करने के लिए वाक्यों के पदों में परिवर्तन होता है। जैसे —

1. मोहिनी सुंदर लड़की है।
2. महेश बलवान लड़का है।

अब यदि इन दोनों वाक्यों को बहुवचन में बदलना चाहे तो इनके पदों में भी परिवर्तन करना होगा। जैसे—

चंपा और चमेली सुंदर लड़कियाँ हैं।

महेश और रहीम बलवान लड़के हैं।

इसी प्रकार 'लड़की है' और 'लड़कियाँ हैं' और 'लड़के हैं' में बदल गए। यदि हम इन क्यों को भूत काल में लिखना चाहें तो इनकी क्रियाओं का रूप बदल जाएगा। जैसे —

लड़कियाँ हैं = लड़कियाँ थीं। लड़के हैं = लड़के थे।

''भिन्न अर्थ प्रकट करने के लिए वाक्य में प्रयुक्त जिस पद में विकार होता है, उसे पदांतर या रूपांतर कहते हैं।''

पदांतर (रूपांतर) के आधार

भाषा में वाक्य सबसे बड़ी इकाई है। वाक्य में अनेक प्रकार के पद होते हैं। इन पदों में संज्ञा या सर्वनाम में परिवर्तन अधिक होता है। यदि संज्ञा या सर्वनाम परिवर्तन होते हैं तो उससे संबंधित सभी पदों में भी परिवर्तन हो जाता है। जैसे—

एकवचन - वह जा रहा है।

बहुवचन - वे जा रहे हैं।

इसी प्रकार वचन के प्रभाव से सर्वनाम 'वह' का परिवर्तित रूप हुआ 'वे'। और 'वे' के अनुसार 'रहे' और 'हैं' हो गया। अत: वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम के परिवर्तन होने पर उनसे संबंधित अन्य पदों में भी परिवर्तन होता है। विशेषण-क्रिया संज्ञा के अनुसार ही होते हैं, शब्दों में ये परिवर्तन करने वाले तत्व हैं- लिंग, वचन और कारक।

(अ) लिंग

लड़का स्कूल जाता है।

लड़की मंदिर जाती है।

ऊपर के वाक्यों में 'लड़का' पुरुष जाति सूचक है और 'लड़की' स्त्री जाति सूचक है। स्त्री और पुरुष जाति की सूचना देने वाले तत्व को व्याकरण में लिंग कहा जाता है। लिंग के आधार पर लड़का पुंलिंग है और लड़की स्त्रीलिंग है। इसी लिंग के आधार पर विशेषण और क्रिया में भी परिवर्तन होता है। जैसे—

वह मोटी लड़की लिख रही है।

यह मोटा लड़का लिख रहा है।

इसी प्रकार अच्छा-अच्छी, लंबा-लंबी, खाता है-खाती है, पढ़ता है-पढ़ती है आदि शब्द भी लिंग के कारण ही परिवर्तित हुए हैं।

'व्याकरण के जिस तत्व से संज्ञा के पुरुष अथवा स्त्री होने का बोध हो, उसे लिंग कहते हैं।'

(आ) वचन

वह लड़का अच्छा गाता है।

वे लड़के अच्छा गाते हैं।

ऊपर के वाक्यों में 'वह लड़का' एक संख्या का सूचक है और 'वे लड़के' एक से अधिक संख्या के सूचक हैं। संख्या की सूचना देने वाले तत्व को व्याकरण में 'वचन' कहते हैं। यदि केवल एक से अधिक संख्या की सूचना मिले तो उसे 'बहुवचन' कहते हैं। वचन से संज्ञा में परिवर्तन होता है। जब संज्ञा में परिवर्तन होता है तो विशेषण और क्रिया में भी परिवर्तन होता है। जैसे कि ऊपर के वाक्यों में 'लड़का' एकवचन और 'लड़के' बहुवचन हुआ। 'लड़के' से संबंधित सभी शब्दों में परिवर्तन हुआ है।

इसी प्रकार आँख-आँखें, पुस्तक-पुस्तकें, साड़ी-साड़ियाँ, कुर्सी-कुर्सियाँ, अच्छा-अच्छे, मीठा-मीठे, छोटा-छोटे, जाता है-जाते हैं, खाता है-खाते हैं, पढ़ता है-पढ़ते हैं, आदि भी वचन के द्वारा परिवर्तित रूप हैं।

''जैसे रूप से वाक्य में एक या एक से अधिक व्यक्ति-वस्तु का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं।''

(इ) कारक

शिक्षक ने छात्रों को पढ़ाया।

शंकरदेव ने वैष्णव धर्म को असम में फैलाया।

ऊपर के वाक्यों में 'ने', 'को', 'में' प्रयुक्त संज्ञाओं का संबंध सूचित करते हैं। इन्हें व्याकरण में 'कारक चिह्न' या 'विभक्ति' कहते हैं। कारक हमेशा संज्ञा या सर्वनाम में ही होता है। अत: इन संज्ञाओं का आपसी संबंध बताने का कार्य ये 'कारक के चिह्न' ही करते हैं। यदि ये वाक्य में प्रयुक्त न किए जाए तो हमें वाक्य का पूर्ण अर्थ प्राप्त नहीं हो सकता। जैसे—

उमेश रमेश मारा।

तुम मुझे घर मिलो।

कारक चिह्न न होने से ऊपर के वाक्यों का सही अर्थ प्राप्त नहीं हो रहा है। अत: कारक-चिह्न (विभक्ति) वाक्य को सार्थक, सजीव और बोधगम्य बनाता है। जैसे—

उमेश ने रमेश को मारा।

तुम मुझसे घर पर मिलो।

कारक संज्ञा या सर्वनाम को परिवर्तित करते हैं। जैसे—

DAILY ASSAM

तुम्हारा लड़का भात खाता है।

तुम्हारे लड़के ने भात खाया।

ऊपर के दूसरे वाक्य में कर्ता का 'ने' चिह्न लगाने से तुम्हारा से तुम्हारे, लड़का से लड़के हुआ।

इसी प्रकार कारक लगाने से सर्वनाम

मैं = मैंने, मुझसे, मेरे।

तुम = तुमने, तुम्हें, तुम्हारे।

वह = उसने, उसे, उसके लिए आदि हुए।

''संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप द्वारा उसका संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ जाना जाता है, उसे कारक कहते हैं।''

अभ्यास

1. पद किसे कहते हैं ?
2. पदांतर किसे कहते हैं ?
3. लिंग किसे कहते हैं ?
4. लिंग और वचन में क्या अंतर है ?
5. कारक किसे कहते हैं ?
6. रिक्त स्थानों पर सही शब्द रखो –

(अ) ..... गाना गाती है। (राम, लड़का, मीनू)

(आ) ..... भात खाता है। (मीनू, लड़की, मोहन)

(इ) ..... दौड़ता है। (हम, वे, लड़कियाँ, लड़के, लड़का)

(ई) ..... खेलते हैं। (मैं, तू, राम, शीला, लड़के)

(उ) हमारे स्कूल ..... चोरी हो गई। (ने, को, में)

(ऊ) उस ..... मुझे पत्थर मारा। (को, में, पर, ने)

लिंग

संसार के सभी प्राणियों में दो वर्ग होते हैं। नरवर्ग को पुरुष कहते हैं और नारीवर्ग को स्त्री कहते हैं। इसी पुरुष और स्त्री के आधार पर हिंदी भाषा में दो लिंग निश्चित किए गए हैं।

1. पुरुषवर्ग-पुंलिंग-आदमी, घोड़ा आदि।
2. स्त्रीवर्ग-स्त्रीलिंग-औरत, घोड़ी आदि।

निर्जीव वस्तुएँ कुछ पुंलिंग और कुछ स्त्रीलिंग होती हैं।

पुंलिंग —

पलंग, ग्रंथ, वृक्ष, तालाब, चाकू, चमचा आदि।

स्त्रीलिंग —

खाट, पुस्तक, पौध, तलैया, छूरी, चम्मच आदि।

जैसे — राम बुद्धिमान लड़का है।

मुमताज बुद्धिमती लड़की है।

गाय दौड़ रही है।

बैल दौड़ रहा है।

पलंग बड़ा है।

चारपाई छोटी है।

ऊपर के वाक्यों में राम, लड़का, बैल, पलंग पुंलिंग और मुमताज, लड़की, गाय, खाट स्त्रीलिंग हैं।

''जिस शब्द से पुरुष जाति का बोध हो उसे पुंलिंग और स्त्री जाति का बोध हो उसे स्त्रीलिंग कहते हैं।''

लिंग निर्णय

हिंदी भाषा में प्राणी-वर्ग के शब्दों का लिंग-निर्णय करना कठिन नहीं है, क्योंकि हम उन्हें सरलता से पुरुषवर्ग और नारीवर्ग में विभाजित कर पुंलिंग-स्त्रीलिंग कर लेते हैं, परंतु अप्राणी वर्ग की वस्तुओं का लिंग निर्णय उनके आकार, प्रकार, गुण आदि के आधार पर किए जाते हैं। यानी हम अप्राणीवाचक शब्दों का वर्गीकरण कर दें तो उनका लिंग आसानी से मालूम कर सकते हैं।

कुछ प्राणीवाचक संदेहमूलक शब्दों का लिंग निर्णय—

1. **पुंलिंग** — — शब्दों से पुरुष और स्त्री दोनों का बोध होता है फिर भी इसका प्रयोग हमेशा पुंलिंग में ही होता है।

जैसे — उल्लू, वुआ, खटमल, चीता, झींगा, पक्षी, भेड़िया आदि।

समुदायवाचक — कुटुम्ब, दल, मण्डल, मछली, समूह, संघ आदि।

2. **स्त्रीलिंग** — कुछ शब्दों से स्त्री-पुरुष दोनों का बोध होता है, किंतु हमेशा स्त्रीलिंग में ही प्रयोग होता है।

जैसे — कोयल, गिलहारी, चिड़िया, चील, जूँ, जोंक, तितली, दीमक, मक्खी, मछली, मैना, संतान, सवारी आदि।

समुदायवाचक — टोली, प्रजा, फौज, सेना, भीड़, सभा, पुलिस, सरकार आदि।

अप्राणीवाचक संज्ञाओं का लिंग निर्णय —

पुंलिंग

दूसरे पृष्ठ पर प्राणीवाचक शब्द पुंलिंग हैं, किंतु उनके नीचे दिए हुए अपवाद स्त्रीलिंग के बोधक हैं।

1. ग्रहों के नाम — सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, शुक्र, वरुण, राहु आदि।
   अपवाद — पृथ्वी।
2. भौगोलिक नाम — देश, नगर, पर्वत, समुद्र, द्वीप, मैदान, प्रकाश वायुमण्डल आदि।
   अपवाद — नदी, झील, घाटी, चोटी, जलवायु आदि।
3. देशों, पर्वतों और समुद्रों के नाम — पुंलिंग होते हैं।
4. समय-विभागों के नाम — वर्ष, माह, सप्ताह, दिन, घंटा, मिनट, सेकेंड आदि।
   अपवाद — दोपहर, साँझ, रात, घड़ी, बेला आदि।
5. धातुओं के नाम - सोना, लोहा, पीतल, ताँबा, काँसा आदि।
   अपवाद — चाँदी, मिट्टी, धातु आदि।
6. अनाजों के नाम — चावल, चना, मटर, बाजरा, तिल आदि।
   अपवाद — दाल, मूँग, मसूर, मकई आदि।
7. रत्नों के नाम — मूँगा, मोती, हीरा, पन्ना, लाल आदि।
   अपवाद — मणि।
8. वृक्षों के नाम — आम, अमरूद, कटहल, नींबू, पीपल, बरगद, सागौन आदि।
   अपवाद — इमली, जामुन, नारंगी आदि।
9. द्रव्य पदार्थों के नाम — दूध, दही, मट्ठा, पानी, तेल, रस आदि।
   अपवाद — कॉफी, चाय, छाछ, शराब, स्याही, स्पिरिट आदि।
10. शारीरिक अवयवों के नाम — बाल, सिर, मुँह, कान, ओठ, नख, पेट, तालू, हाथ आदि।
    अपवाद — आँख, नाक, जीभ, दाढ़ी, मूँछ, कलाई, कमर, छाती, भूजा, नस, हड्डी, रीढ़, पलक आदि।
11. हिंदी वर्णमाला के सभी अक्षर — अ से ह तक ।

DAILY ASSAM

स्त्रीलिंग

निम्नलिखित अप्राणीवाचक शब्द स्त्रीलिंग हैं, किंतु उनके नीचे दिए हुए अपवाद पुंलिंग हैं।

1. नक्षत्रों और तिथियों के नाम — अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, एकम् (प्रतिपदा) तिथि से पूर्णिमा तक।
   अपवाद — पुष्प, पुनर्वसु, हस्त आदि।

2. नदियों के नाम — गंगा, यमुना, नर्मदा, काबेरी, झेलम, महानदी, गंडक, कोसी आदि।
   अपवाद — सिंधु, सोन, ब्रह्मपुत्र।
3. मिर्च मसालों के नाम — इलायची, लौंग, चिरौंजी, दालचीनी, धनिया, मिर्च, सुपारी, हल्दी, हींग आदि।
   अपवाद — कपूर, नमक, जीरा, तेजपात आदि।
4. भोजन के व्यंजनों के नाम — पूरी, कचौरी, रोटी, जलेबी, खीर, दाल, सब्जी, पकौड़ी, मिठाई, बर्फी, खिचड़ी, चटनी आदि
   अपवाद — भात, दही, पराठा, हलुआ, लड्डू, पेड़ा, रसगुल्ला, रायता आदि।

अनुकरणवाचक शब्द

बक-बक, झक-झक, भट-भट, गड़बड़, खटपट आदि।

1. संस्कृत और अंग्रेजी के स्त्रीलिंग शब्द हिंदी में भी स्त्रीलिंग माने जाते हैं।

संस्कृत की वे संज्ञाएँ, जिनके अंत में आ, इ, ई, उ स्वर लगा हुआ रहता है, प्राय: स्त्रीलिंग होती हैं। जैसे —

	अपवाद
आ —कृपा, क्षमा, आत्मा, महिमा आदि	
इ — छवि, रात्रि, जाति, गति, योनि आदि	गिरि, जलधि, प्राणी आदि
ई— नदी, पृथ्वी, शताब्दी, वेणी आदि	घी, दही, पानी, मोटी आदि
उ — आयु, ऋतु, धातु, धेनु, वस्तु, वायु आदि	अश्रु, चक्षु, तालु, मधु आदि
ऊ — भू, भ्रू, दारू, झाड़ू, लू आदि	डमरू, भालू आदि

2. हिंदी की उनवाचक संज्ञाएँ —
   खटिया , डिबिया, पुड़िया, लड़िया आदि।
   अपवाद —जाँघिया।
3. हिंदी की वे भाववाचक संज्ञाएँ, जिनके अंत में — आई, ता, आहट, आवट हो।
   आ —लंबाई, चौड़ाई, गुड़ाई, निराई, चटाई, मुटाई आदि।
   ता — कोमलता, नम्रता, सुंदरता, नीचता, मलिनता, आदि।
   आहट — आहट, चिकनाहट, घबराहट, चिल्लाहट आदि।
   आवट — बनावट, बुनावट, सजावट, मिलावट, गिरावट आदि।
4. वे संज्ञाएँ, जिनके अंत में ख, ट, ता, ना, स, स, ह लगा हो।
   खा — चीख, भूख, भीख, राख, आँख, देख, रेख, ईख आदि।
   ट — झँझट, बाट, खाट, घाट, चरट, चोट, मोट आदि।
   त — छत, भीत, रात, मीत, जीत, शीत, रीत आदि।
   अपवाद — खेत, गीत, भात आदि।
   ना — प्रार्थना, प्रस्तावना, वेदना आदि।
   स — साँस, मिठास, बाँस, घास, आस, धूम, टीस आदि।
   अपवाद — रस, माँस।
   श — कोशिश, मालिश, तलाश, लाश, ताश आदि।
   अपवाद — जोश, होश आदि।
   ह — निगाह, सुबह, सलाह, राह, आह, चाह आदि।
   अपवाद — माह, मुँह आदि।

5. यदि अंग्रेजी या अन्य विदेशी भाषाओं से आए हुए शब्दों के अंत में उपयुक्त वर्ण हो तो उनका लिंग निर्णय भी ऊपर दिए अनुसार होगा। जैसे —

आकारांत अंग्रेजी शब्द पुंलिंग होंगे —

अलजबरा, कामा, केमरा, सोडा आदि।

ईकारांत अंग्रेजी शब्द स्त्रीलिंग होंगे —

कंपनी, कमेटी, चिमनी, डिक्शनरी, पार्टी, हिस्ट्री आदि।

पुंलिंग से स्त्रीलिंग बनाने के नियम

पुंलिंग से स्त्रीलिंग बनाने के कुछ नियम ये हैं —

पुंलिंग शब्दों में प्रत्यय जोड़कर स्त्रीलिंग बनाना —

1. अकारांत संज्ञा और विशेषण के अंत में 'अ' को 'आ' में बदल कर पुंलिंग से स्त्रीलिंग बनाया जाता है।

पुं.	**स्त्री.**	**पुं.**	**स्त्री.**
बाल	बाल+आ–बाला		
प्रथम	प्रथमा	महोदय	महोदया
तनय	तनया	चंद्र	चंद्रा
प्रिय	प्रिया		
सुत	सुता		

2. अकारांत शब्द के 'अक' को 'इक' में बदल फिर उनमें 'आ' जोड़ कर —

पुं.	**स्त्री.**	**पुं.**	**स्त्री.**
उपदेश	उपदेशिका		
(उपदेश+अक)	(उपदेश+इक+आ)		
गायक	गायिका	अध्यापक	अध्यापिका
नायक	नायिका	बालक	बालिका

3. अकारांत संज्ञा को इकारांत कर —

पुं.	**स्त्री.**	**पुं.**	**स्त्री.**
कुमार	कुमारी	किशोर	किशोरी
दास	दासी	पुत्र	पुत्री
देव	देवी	तरुण	तरुणी

DAILY ASSAM

4. ईकारांत संज्ञाओं के अंत में 'नी' या 'णी' जोड़कर —
(पूर्व, दीर्घ, 'ई' ह्रस्व 'इ' हो जाता है।)

पुं.	**स्त्री.**
अधिकारी	अधिकारी + नी = अधिकारिणी
अनुगामी	अनुगामिनी
तपस्वी	तपस्विनी
हितकारी	हितकारिणी आदि।

5. जिन संज्ञाओं के अंत में 'वान' या 'मान' प्रत्यय लगे हों उन्हें 'वती' या 'मती' में बदल कर —

पुं.	स्त्री.
पुत्रवान	पुत्र + वती = पुत्रवती
भाग्यवान	भाग्यवती
श्रीमान	श्रीमती आदि

6. कुछ पुं. संज्ञाओं के अंत में - अन, आनी, आइन, इन प्रत्ययों को जोड़कर भी स्त्रीलिंग बनाते हैं —

पुं.	स्त्री.
कुम्हार + अन	कुम्हारिन (कुम्हार)
लुहार + अन	लुहारिन (लुहारन)
धोबी + अन	धोबन (धोबिन)
भव + आनी	भवानी
वर्मा + आनी	वर्मानी
मास्टर + आइन	मास्टराइन
डॉक्टर + आइन	डॉक्टराइन
नाई + आइन	नाईन

अपवाद -

पति	पत्नी
विद्वान	विदुषी
युवा	युवती

वाक्य प्रयोग द्वारा लिंग-निर्णय

1. जब विभक्ति रहित कर्ता होगा तब क्रिया के लिंग भी कर्ता का ही लिंग होगा। जैसे —

बादल गरजता है।
पानी बरसता है।
दही खट्टा है।
बकरी भूखी है।
दाढ़ी लंबी है।
धोती मोटी है। आदि

2. जब 'ने' विभक्ति सहित कर्ता और विभक्ति रहित कर्म हो, क्रिया का लिंग कर्म के अनुसार होगा। जैसे—

नौकर ने भात खाया।	सीता ने भात खाया।
महेंद्र ने रोटी खाई।	बिल्ली ने पीठा खाया।

संबंधवाचक प्रत्यय— का, के, की के अनुसार हम, तू, तुम के साथ रा, रे, री में ना, ने, नी 'आप' के साथ होता है। जैसे —

सलीम का घर पहाड़ पर है।
मेरी पुस्तकें शीला की आलमारी में हैं।
मैं अपनी घड़ी लाया हूँ।
आप अपना मकान मुझे दे दीजिए।

ऊपर के वाक्यों में सलीम का घर 'का' प्रत्यय लगने से घर पुंलिंग मेरी पुस्तक 'री' प्रत्यय लगने से पुस्तक स्त्रीलिंग, अपनी घड़ी 'नी' प्रत्यय लगने से घड़ी स्त्रीलिंग, अपना मकान 'ना' प्रत्यय लगने से मकान पुंलिंग हुआ। इसी प्रकार — सीता का मेखला, रूपाली का चश्मा, बहनजी का नौकर, हमारा देश, तुम्हारा फूल, अपना बगीचा, अपना फर्नीचार में का-रा-ना संबंधवाचक प्रत्यय लगने से क्रमशः मेखला, चश्मा, नौकर, देश, फूल, बगीचा, फर्नीचर पुंलिंग हुए और रमेश की घड़ी, रीता की साड़ी, हमारी संस्कृति, अपनी चाय में की-री-नी संबंध प्रत्यय लगने से क्रमशः घड़ी, साड़ी, संस्कृति, चाय शब्द स्त्रीलिंग हुए।

जब आकारांत विशेषण का विकृत रूप संज्ञा के साथ प्रयुक्त हुआ हो तो उस विकृत विशेषण के अनुसार ही संज्ञा का लिंग होता है। जैसे —

अच्छी बात करो।
उजली चादर बिछाओ।
लंबा कोट पहनो।
बड़ा छाता खरीदो।
ठंडा शरबत लाओ।

ऊपर के वाक्यों से अच्छी, उजली, विशेषणों का लिंग स्त्रीलिंग है। इसलिए बात और चादर संज्ञाएँ भी स्त्रीलिंग हैं। लंबा, बड़ा, ठंडा विशेषणों का लिंग पुंलिंग है। इसलिए कोट, छाता, शरबत, संज्ञाएँ भी पुंलिंग हैं।

टिप्पणी — अकारांत का अर्थ है शब्द केअंत में 'अ' होना। इसी प्रकार अकारांत, सकारांत, ईकारांत, खकारांत, नकारांत आदि का अर्थ है —क्रमश: आ, स, ई, ख, न वर्ग का शब्द के अंत में होना।

अभ्यास

1. रिक्त स्थानों पर सही शब्द भरो —
   (अ) हिंदी भाषा के ..... लिंग हैं। (चार, तीन, पाँच, एक, दो)
   (आ) हिंदी भाषा अप्राणीवाचक शब्दों के लिंग ज्ञान करना ..... है। (सरल, सहज, आसान, कठिन)
   (इ) हिंदी व्याकरण में अप्राणीवाचक छोटी, कोमल और पतली वस्तुओं को ..... माना जाता है। (स्त्रीलिंग, पुंलिंग)
   (ई) हिंदी व्याकरण में अप्राणीवाचक बड़ी कठोर और मोटी वस्तुओं को ..... माना जाता है। (स्त्रीलिंग, पुंलिंग)
   (उ) हिंदी में पुरुषवर्ग शब्दों को ..... और स्त्री वर्ग के शब्दों को ..... कहते हैं। (स्त्रीलिंग, पुंलिंग)
2. नीचे लिखे पुंलिंग शब्दों को स्त्रीलिंग में बदलो—
   नर, घोड़ा, पहाड़, धोबी, बरुवा, मास्टर, महोदय, श्रीमान्, भगवान, उपदेशक, बालक, अनुगामी, दास, तरुण।
3. नीचे लिखे स्त्रीलिंग शब्दों को पुंलिंग में बदलो —
   नायिका, अध्यापिका, पुत्री, तपस्विनी, पुत्रवती, देवी, सुता, कुम्हारिन, धोबिन।
4. नीचे लिखे वाक्यों में प्रयुक्त संज्ञाओं के लिंग बताओ —
   बैंगन सड़ा हुआ है।
   चाय बन रही है।
   महेश ने दाल बनाई।
   मीनू का घर इधर है।
   मीठा रस पीओ।

वचन-प्रयोग

जैसा कि पहले हम जान चुके हैं कि विकारी शब्द का वह रूप, जिससे उसकी संख्या का बोध होता है, वचन कहलाता है। हिंदी में केवल दो ही वचन होते हैं, जिससे एक वस्तु का बोध होता है, वह एकवचन और एक से अधिक वस्तु के बोध कराने वाली संज्ञा बहुवचन होती है।

लड़का खेलता है। एकवचन
लड़के खेलते हैं। बहुवचन

अ) वचन प्रयोग संबंधी कुछ विशेष बातें—

. आदर सूचित करने के लिए एकवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग होता है और इसका प्रभाव सीधे विशेषण और क्रिया

पर पड़ता है। जैसे —

रमेश अच्छा लड़का है।

रमेश जी अच्छे लड़के हैं।

गांधी जी हमारे राष्ट्रपिता हैं।

पिता जी आ रहे हैं।

गुरु जी अच्छे आदमी हैं।

2. हिंदी की कुछ संज्ञाएँ बहुवचन में ही प्रयुक्त होती हैं। जैसे —

मुझे पिताजी के दर्शन हुए।

मेरे तो प्राण सूख गए।

आपके क्या समाचार हैं ?

3. किसी-किसी शब्द का रूप एकवचन और बहुवचन में समान रहता है। ऐसे शब्द का रूप बहुवचन सूचित करने के लिए उसके साथ सब, गण, वृंद, लोग इत्यादि समूहवाचक शब्द लगा देते हैं। जैसे—

सभी विद्यार्थी आपसे मिलने आए हैं।

सदस्यगण चले गए।

छात्रवृंद खेल रहे हैं।

आपलोग यहाँ बैठे।

4. जातिवाचक संज्ञा की अधिकता सूचित करने के लिए बहुधा उसका प्रयोग एकवचन में होता है। जैसे—

सियार चालाक होता है।

इस वर्ष आम खूब फला है।

आदमी विचारशील प्राणी होता है।

मोहम्मद को इनाम में बहुत रुपया मिला।

5. ईकारांत संज्ञा को जब विभक्ति सहित बहुवचन वाली संज्ञा में बदलता हो तब अंत का 'ई' ह्रस्व 'इ' हो जाता है और इसमें 'यों' प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे —

भाई	=	भाई+यों — भाइयों को
माली	=	मालियों को
सखी	=	सखियों को
आदमी	=	आदमियों से
लड़की	=	लड़कियों को

6. इतिवाचक, द्रव्यवाचक, समूहवाचक और भाववाचक संज्ञाएँ सामान्यत: एकवचन में प्रयुक्त होती हैं, किंतु जब ये बहुवचन में प्रयुक्त होती हैं, तब जातिवाचक हो जाती हैं और प्राय: संख्या या प्रकार का बोध होता है। जैसे—

पुरियों में सात प्रसिद्ध हैं। (व्यक्तिवाचक)

सब तेलों में ब्राह्मी श्रेष्ठ है। (द्रव्यवाचक)

मेलों में सर्वश्रेष्ठ कुंभ का मेला है। (समुदायवाचक)

खटाइयों में इमली की खटाई का क्या मुकाबला ? (भाववाचक)

एकवचन से बहुवचन बनाने के नियम —

1. अकारांत पुंलिंग को छोड़कर बाकी सभी पुंलिंग संज्ञाओं के रूप विभक्ति रहित कर्ता कारक के एकवचन और बहुवचन में समान रहते हैं। जैसे—

एकवचन	बहुवचन
भाई आया है।	भाई आए।
मित्र गया।	मित्र गए।
शिकारी दौड़ा।	शिकारी दौड़े।
साधु पहुँचा।	साधु पहुँचे।

2. आकारांत पुंलिंग शब्द के अंतिम 'आ' को विभक्ति रहित कर्ता कारक के बहुवचन में 'ए' कर देते हैं। जैसे —

बच्चा	बच्चे
रास्ता	रास्ते आदि।

अपवाद - काका, चाचा, मामा, राजा।

टिप्पणी— उपर्युक्त बहुवचन में विभक्ति लगा देने से एकवचन हो जाएगा। जैसे— बच्चे ने।

3. आकारांत स्त्रीलिंग संज्ञा कर्ता कारक के रूप में हो तो उसके अंतिम 'अ' के स्थान पर बहुवचन में 'एँ' हो जाता है। जैसे—

एकवचन		**बहुवचन**
आँख	=	आँख + एँ = आँखें
गाय	=	गायें
बात	=	बातें
याद	=	यादें
पुस्तक	=	पुस्तकें

4. आकारांत, उकारांत औकारांत स्त्रीलिंग संज्ञाओं में 'एँ' जोड़कर विभक्ति रहित कर्ता का बहुवचन रूप बन जाता है। जैसे —

एकवचन		**बहुवचन**
माता + एँ	=	माताएँ
लता	=	लताएँ
वस्तु	=	वस्तुएँ
गौ	=	गौएँ

5. इकारांत स्त्रीलिंग संज्ञा को विभक्ति रहित कर्ता के रूप में बहुवचन बनाने के लिए अंत में 'याँ' जोड़ना चाहिए। जैसे —

एकवचन	**बहुवचन**
तिथि	= तिथियाँ
नीति	= नीतियाँ
जाति	= जातियाँ

6. ईकारांत संज्ञा को भी ऊपर के नं. 5 के अनुसार बहुवचन बनाया जाता है।

एकवचन		**बहुवचन**
लड़की	=	लड़की +याँ - लड़कियाँ
साड़ी	=	साड़ी + याँ - साड़ियाँ

(ख) विभक्ति सहित संज्ञाओ का बहुवचन बनाना —

1. विभक्ति लगने से बहुवचन वाली संज्ञाएँ निम्नप्रकार बनाई जाती हैं —

(अ) अकारांत संज्ञा के 'अ' को 'ओं' में बदल कर —

एकवचन	**बहुवचन**
बालक ने	बालकों ने
बात में	बातों में

(आ) आकारंत संज्ञाओं के 'आ' को 'ओं' में बदल कर —

घोड़े को	घोड़ों को
झगड़े	झगड़ों में

(इ) आकारांत स्त्रीलिंग शब्दों में 'ओं' जोड़ कर —

माता ने	माताओं ने
कन्या ने	कन्याओं ने
विधवा ने	विधवाओं ने
अध्यापिका ने	अध्यापिकाओं ने

(ई) उकारांत, एकारांत, औकारांत संज्ञाओं के अंत में 'ओं' जोड़कर—

एकवचन	**बहुवचन**
साधु ने	साधुओं ने
वस्तु को	वस्तुओं को
दूबे ने	दूबेओं ने
गौ को	गौओं को

(उ) ऊकारांत संज्ञाओं के 'ऊ' को 'उ' में बदल कर 'ओं' जोड़ने से —

आलू का	आलुओं का
चाकू से	चाकुओं से
बहू ने	बहुओं ने

(ऊ) ओकारांत संज्ञा से 'ओं' को जोड़ कर —

रासो की	रासोओं की

(अ) विभक्तियुक्त याकारांत संज्ञाओं में 'या' को 'यों' बदल कर—

एकवचन	**बहुवचन**
पहिया से	पहियों से
बिटिया ने	बिटियों ने
खटिया पर	खटियों पर

(आ) इकारांत संज्ञाओं में 'यों' जोड़कर —

पति को	पतियों को
जाति को	जातियों को
रीति को	रीतियों को

(इ) ईकारांत संज्ञाओं की 'ई' को 'इ' में बदल कर 'यों' जोड़ कर—

माली ने	मालियों ने
लड़की को	लड़कियों को

अभ्यास

1. वचन कितने प्रकार के होते हैं ?
2. रिक्त स्थानों पर सही शब्द लिखो—
   (अ) विभक्ति वाली बहुवचन संज्ञाएँ .... होते हैं। (अकारांत, आकारांत, योकारांत, योंकारांत)
   (आ) ईकारांत संज्ञा के विभक्ति वाले बहुवचन रूप .... होता है। (आकारांत, योंकारांत)
   (इ) इकारांत संज्ञा के अंत में .... जोड़ने से बहुवचन रूप होता है। (ए, ई, याँ)
3. नीचे दी हुई एकवचन वाली संज्ञाओं को विभक्ति रहित बहुवचन वाली संज्ञा में बदलो —
   वस्तु, बह, बात, रात, बच्चा, लड़का, लड़की, साड़ी, तिथि, आली, बूढ़ी, पुस्तक, मेखला, चादर।
4. नीचे दी हुई एकवचन वाली संज्ञाओं को विभक्ति सहित बहुवचन वाली संज्ञा में बदलो—
   पति की, लड़की ने, घोड़ी पर, माली ने, नदी को, बालक को, साधु से, आलू की, वस्तु में, गधे को, बैल पर, बकरी से, पहाड़ी पर, [illegible] में, बाँस से, भालू को।

➢≺

कारक-प्रयोग

कारक-विभक्तियों के विविध प्रयोग

'ने' विभक्ति (कर्त्ता कारक) का प्रयोग

'ने' कर्ता कारक की विभक्ति है। इसका प्रयोग कुछ परिस्थितियों में ही होता है।

1. भूत कालिक, (सामान्य, आसन्न, पूर्ण और संदिग्ध भूत में) सकर्मक क्रियाओं के कर्ता के साथ 'ने' का प्रयोग होता है।

2. नहाना, छींकना, खाँवन, थूकना आदि अकर्मक क्रियाओं के भूत काल के रूपों के साथ (सामान्य, आसन्न, पूर्ण और संदिग्ध रूपों के साथ) 'ने' प्रयोग होता है।

मैंने नहाया।

शीला ने अभी नहाया।

तुमने आज नहीं नहाया।

बूढ़े ने खाँसा।

3. सजातीय क्रिया के भूत काल में भी 'ने' का प्रयोग हो सकता है। जैसे—वीर बरफुकन ने कई लड़ाइयाँ लड़ीं। अब उसने नई चाल चली।

4. उन संयुक्त क्रियाओं के कर्ता में 'ने' का प्रयोग होता है, जिनकी अंतिम क्रिया सकर्मक हो। जैसे—

उसने मुझे बोलने दिया।

तुमने क्या कहना चाहा ?

तुमने अब बहुत सो लिया।

'ने' का प्रयोग नहीं होता

1. कर्ता को छोड़कर अन्य किसी कारक या शब्द के साथ 'ने' का प्रयोग नहीं होता है। जैसे —

   मीरा ने मुझे लड्डू दिए।

2. वर्तमान और भविष्यत् काल में 'ने' का प्रयोग नहीं होता।

3. नहाना, छींकना, खाँसना, थूकना आदि को छोड़कर अकर्मक क्रियाओं के कर्ता कारक में ने विभक्ति नहीं लगती, चाहे ये किसी काल में हों।

   जैसे — मैं हँसा, सीता कूदी, सतीश भागा, मैं गया।

4. बोला, भूलना, लाना, सकना आदि सकर्मक क्रियाओं के कर्ता में 'ने' का प्रयोग नहीं होता।

   हाजरिका बोला इधर आओ।
   कंदली बिलकुल झूठ बोला।
   बरुवाजी हमें क्यों भूले हैं?
   सुनो बच्चो! शइकीया मिठाई लाया।
   मैं बायन के घर नहीं जा सका।

5. यदि संयुक्त क्रिया का उत्तरार्द्ध अकर्मक हो तो कर्ता कारक के साथ 'ने' नहीं लगता। जैसे —

   हम पढ़ चुके।
   तुम नहा चुके।
   वे जा चुके।

'को' विभक्ति— (कर्म कारक) का प्रयोग

'को' विभक्ति कर्म कारक की विभक्ति है, परंतु प्रयोग के आधार पर यह अन्य कारक के साथ भी जा सकती है।

'को' विभक्ति कहाँ लगती है?

1. प्रधानत: प्राणीवाचक कर्म कारक में 'को' विभक्ति लगती है। जैसे-

   नीमा ने नीलू को मारा।
   पिताजी इसको पढ़ा रहे हैं।

2. जब कर्म कारक पर जोर देना हो तो अप्राणीवाचक कर्म कारक के साथ भी 'को' विभक्ति लगती है।

   अपनी संस्कृति को बचाओ।

   किताब को बेच दो और भीख माँगो।

3. नमस्कार, आशीर्वाद, धिक्कार आदि करते समय जिसके प्रति किया जाए, उसके आगे 'को' लगता है।

   मैं आपको धन्यवाद देता हूँ।

   राम उनको नमस्कार करता है।

अन्य कारकों के साथ 'को' विभक्ति का प्रयोग—

कर्ता कारक के साथ 'को'

राम को स्कूल जाना ही पड़ेगा।

गुरुजी को कल घर जाना ही है।

कहीं तुमसे मिलने को जी चाहता है।

बच्चे को इनाम मिला।

मुझको जब आप मिल गए तो सब मिल गया।

क्रिया की अनिवार्यता, चाहना क्रिया, प्राप्ति अर्थ आदि में 'को' विभक्ति का प्रयोग कर्ता कारक के साथ होता है।

संप्रदान कारक के साथ 'को'—

भूखे को रोटी दो।

वे चाय पीने को गए हैं।

ऊपर के वाक्यों में भूखे के लिए, पीने के लिए अर्थात् संप्रदान कारक की विभक्ति 'के लिए' के स्थान पर 'को' विभक्ति का प्रयोग हुआ।

अधिकरण कारक के साथ 'को' विभक्ति -

रात को भोजन मत करना।

अब सीधा घर को जाऊँगा।

आप दिन को आएँगे या रात को?

ऊपर के वाक्यों में रात को, घर को, दिन को आदि अधिकरण कारक हैं। अधिकरण कारक की विभक्ति है में, पर। अत: ऊपर के उदाहरणों में रात में, घर पर, दिन में होना चाहिए था, परंतु 'को' विभक्ति भी इसी अर्थ में प्रयुक्त हुई है।

'को' विभक्ति का प्रयोग कहाँ नहीं होता?

1. अप्राणीवाचक कर्म के साथ 'को' विभक्ति नहीं लगना चाहिए।

(यदि अर्थ स्पष्ट या जोर डाल कर प्रकट करना चाहें तो 'को' विभक्ति का व्यवहार कर सकते हैं।)

शेखर फल खाता है।

मैं पुस्तक पढ़ता हूँ।

2. सकर्मक क्रिया का कर्म अगर कर्ता के रूप में प्रयुक्त हो तब 'को' नहीं लगना चाहिए।

भात पकता है।

मकान बन रहा है।

'से' विभक्ति (करण कारक, अपादान कारक) का प्रयोग

करण कारक में 'से' विभक्ति लगती है। जैसे —

परेश ने लाठी से साँप मारा।

चम्मच से भात खाओ।

अन्य अवस्था में 'से' का प्रयोग—

1. कर्म वाच्य और भाव वाच्य में कर्ता कारक के साथ—

मुझसे भात नहीं खाया जाता।

नौकर से यह काम नहीं होता।

2. कर्म कारक के साथ —

मैंने उनसे हाल कह दिया।

सतीश से कहो वह तुम्हारी बात सुनेगा।

3. अपादान कारक के साथ —

वृक्ष से पत्ता गिरा।

मैं स्टेशन से आया।

4. जिससे कोई लाभ या प्रयोजन हो या न हो, उस शब्द के साथ 'से' लगता है। जैसे—

ऐसे आदमी से हमें क्या लाभ?

तुमसे मतलब?

हमें तो काम से मतलब है।

5. रीति या विधिवाचक क्रिया-विशेषण के साथ भी 'से' लगता है। जैसे—

धीरे से बोलो।

शांति से रहो।

आप किधर से आ रहे हैं?

6. भय के अर्थ में भय-प्रधान संज्ञा के साथ 'से' लगता है।

आपसे भगवान बचाए।

गरीब से कौन डरता है।

7. खाद्य पदार्थ के सहकार में पदार्थ के साथ 'से' का प्रयोग होता है। जैसे—

चीनी से रोटी खा लो।

दूध से भात खा लो।

8. अवधि या सीमावाचक शब्दों के मध्य भी 'से' का प्रयोग होता है। जैसे—

मैं सुबह से शाम तक काम करता हूँ।

हम असम से गुजरात तक घूम चुके हैं।

प्रयोग में 'से' विभक्ति का क्षेत्र व्यापक है, परंतु 'से' के स्थान पर वाक्यों में शब्दों का प्रयोग होता है। जैसे—

के कारण = (से)

पुण्य के कारण आपका भाग्य चमक गया।

के द्वारा = (से)

चम्मच के द्वारा भात खाना ठीक नहीं है।

के सहारे = (से)

मैं रस्सी के सहारे कुएँ में उतरा।

के निमित्त = (से)

धन के निमित्त मोहन बड़ा है, परंतु बुद्धि के निमित्त छोटा हैं।

के बल = (से)

शक्ति के बल उसने मुझे दबा दिया।

को, के, लिए — विभक्ति (संप्रदान कारक) का प्रयोग

को, के लिए संप्रदान की विभक्ति है। जैसे—

रमेश को तीन आम दो।

रमेश के लिए दो आम दो।

रमेश के वास्ते तीन आम दो।

ऊपर के वाक्यों में को, के, लिए, के वास्ते संप्रदान कारक की विभिक्तियाँ हैं।

में, पर विभक्ति (अधिकरण कारक) का प्रयोग

में, पर, के ऊपर, पै — ये सब अधिकरण की विभक्तियाँ हैं। जैसे —

मेज पर दवात है।

मेज पै दवात है।

मेज के ऊपर दवात है।

दवात में स्याही है।

अधिकरण का अर्थ है आधार अर्थात् क्रिया के घटित होने के स्थान या वस्तु की स्थिति का बोध इन विभक्तियों से होता है। जब वस्तु किसी अन्य वस्तु पर बिना ढँकी हुई रखी जाती है तो समान अर्थ वाली विभक्ति पर, पै, के ऊपर आदि का प्रयोग होता है। जब आसपास या ऊपर से ढँक कर वस्तु को रखते हैं तो 'में' विभक्ति का प्रयोग होता है। 'में' के स्थान पर अन्य शब्दों का भी प्रयोग होता है। जैसे —

कुएँ में पानी है।

कुएँ के भीतर पानी है।

कुएँ के अंदर पानी है।

के भीतर, के अंदर समान अर्थ वाले शब्द हैं, जो अधिकरण की विभक्ति 'में' के स्थान पर आते हैं।

अन्य स्थानों पर अधिकरण की विभक्तियों का प्रयोग -

1. करण कारक के साथ— में, पर = (से)
   ऐसा काम करो, जिसमें कि देश की शान मिटने न पाए। (में =से)
   इसी बात पर वह चिढ़ गया। (पर=से)
2. संप्रदान कारक के साथ—
   एक रुपये में क्या तुम्हारी जान निकल जाएगी। (के लिए)
   मैं कल शाम में आपके घर जाऊँगा। (को)
   मैं आधा वेतन माता-पिता पर खर्च करता हूँ। (के लिए)
   इसी बात पर आप मर मिटे। (के लिए)
3. दूर और समीप अर्थ वाले शब्दों के साथ—
   पास में मंदिर है।
   थोड़ी दूर पर डाकघर है।
4. काल, हेतु, अंतर — अर्थ को प्रकट करने वाले शब्दों के साथ —
   अंग्रेजों ने 1826 में असम को अपने अधिकार में कर लिया।

वह दो घंटे में पान बाजार पहुँचता है।

दो-दो घंटे पर चाय पीना अच्छा नहीं है।

सलीम में और राकेश में क्या अंतर है ?

5. पारस्परिक प्रेम, दुश्मनी आदि का अस्तित्व प्रकट करना हो तो 'में' विभक्ति ही लगती है।

सलीम और राम में गहरी दोस्ती है।

सूर्प और नकुल में घोर दुश्मनी है।

6. समुदाय के लोगों में किसी एक व्यक्ति की विशेषता अधिक प्रकट करनी हो तब समुदाय वाचक शब्द के आगे 'में' विभक्ति लगती है।

सब लड़कों में उमेश तेज है।

उन सबसे बड़ा मोहन है।

7. स्थितिवाचक शब्द के साथ 'में' विभक्ति—

मैं आनंद में हूँ।

सुरेश होश में नहीं है।

8. सामीप्यसूचक शब्द के साथ 'पर' विभक्ति—

फाटक पर चौकीदार खड़ा है।

मेरा घर सड़क पर है।

कालवाचक, स्थानवाचक, क्रिया-विशेषण यदि अकारांत या आकारांत हो तो में, पर विभक्तियों का प्रयोग नहीं होता। जैसे -

मैं पाँच बजे उठता हूँ। (में)

उस समय मैं वही था। (पर)

1. 'पै' का प्रयोग केवल कविता में ही होता है। जैसे—

'अँचवत पै तानों जब लागो रोवत जीभ गढ़ै।' (सूरदास)

अभ्यास

1. सही उत्तर दो—
   (अ) हिंदी में कितनी विभक्तियाँ हैं ?
   (आ) क्या विभक्तियाँ परिवर्तनशील होती हैं ?
   (इ) 'ने' विभक्ति का प्रयोग कहाँ होता है ?
   (ई) 'को' विभक्ति का कौन-कौन से कारकों के साथ प्रयोग होता है ?
   (उ) 'से' विभक्ति का किन-किन कारकों के साथ प्रयोग होता है ?
2. नीचे दी हुई विभक्तियों को अपने वाक्यों में प्रयोग करो—
   ने, को, से, द्वारा, के लिए, में, पर।
3. 'से' विभक्ति का प्रयोग कर्ता, करण, अपादान कारक के साथ वाक्य बनाओ।
4. 'को' विभक्ति का प्रयोग कर्ता, कर्म, संप्रदान कारक के साथ-साथ करके वाक्य बनाओ।

प्रत्यय-परिचय

1. प्रत्यय—

मूल शब्द या धातु के साथ जो शब्द-खंड लगते हैं, वे प्रत्यय कहलाते हैं। इन वाक्यों को यदि मूल शब्द से अलग कर लें तो कोई अर्थ नहीं होता। जैसे—

तुमने पत्र लिखकर कहाँ भेजा ?
ऊपर के वाक्यों में - ने, कर, आ (भेज + आ) प्रत्यय है।

2. प्रत्यय के प्रकार —

मूल शब्द में प्रत्यय हमेशा मध्य या अंत में ही लगता है। कुछ प्रत्यय अविकारी होते हैं तो कुछ विकारी होते हैं। अत: प्रत्ययों का वर्ग इस प्रकार हो सकता है-

1. शब्द के आधार पर प्रत्ययों के प्रकार

(अ) संज्ञा-सर्वनाम में लगने वाले प्रत्यय -

राम ने मोहन को धीरे से बुलाया।

तुमने मुझको क्यों मारा ?

ने, को, से प्रत्यय हैं। इन्हें विभक्ति भी कहा जाता है। ये अपरिवर्तशील है। इसी प्रकार में, पर, के लिए आदि भी प्रत्यय हैं।

उसका भाई तुम्हारा नाम जानता है।

आपका घर ही मेरा घर है।

का, के, का, रा, रे, री, ना, ने, नी संबंधवाचक प्रत्यय है, जो संज्ञा सर्वनाम को मूल कारक की संज्ञा के साथ जोड़ते हैं।

(आ) संज्ञा-सर्वनाम-विशेषण-क्रिया में लगने वाले प्रत्यय -

हम आज अच्छे आदमियों से मिलेंगे।

वे पहाड़ियों पर जा रहे हैं।

ऊपर के वाक्यों में अच्छे, आदमियों, मिलेंगे, पहाड़ियों, रहे हैं - क्रमश: ए, एँगे, यों, रहे-प्रत्यय हैं, इनका रूप वचन, लिंग, काल आदि के प्रभाव से बदलता जाता है।

2. प्रयोग के आधार पर प्रत्यय

भाषा में सभी शब्दों के साथ प्रत्यय आते हैं। शब्द-निर्माण में प्रत्ययों का विशेष महत्व है। प्रयोग के आधार पर प्रत्ययों को हम दो भागों में रख सकते हैं - 1. कृत प्रत्यय 2. तद्धित प्रत्यय

कृत प्रत्यय -

क्रियाओं के साथ प्रयुक्त होने वाले प्रत्यय कृत प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे—

पढ़ + ना = पढ़ना

पढ़ + आ = पढ़ा

पढ़ + ई = पढ़ी

पढ़ + ओ = पढ़ो

पढ़ + एँ = पढ़े

पढ़ + ता = पढ़ता

तद्धित प्रत्यय -

संज्ञा या अन्य शब्दों के साथ प्रयुक्त परिवर्तनशील प्रत्यय तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे —

पहाड़ + ओं = पहाड़ों

पहाड़ + इयाँ = पहाड़ियाँ

पहाड़ + ई = पहाड़ी

(इ) संज्ञा या सर्वनाम के साथ प्रयुक्त अपरिवर्तनशील प्रत्यय विभक्ति कहलाते हैं। ये कारक चिह्न माने गए हैं।

शब्द प्रत्यय -

उस + ने = उसने

उस + को = उसको (उसे)

उस + में = उसमें

उस + से = उससे (उसे)

उस + पर = उसपर

(ई) संज्ञा या सर्वनाम के साथ प्रयुक्त परिवर्तनशील और केवल कर्ता से संबंध बतानेवाला प्रत्यय 'संबंध प्रत्यय' कहलाता है। इसी संबंध विभक्ति भी माना जाता है।

संबंध प्रत्यय-

संबंधवाचक प्रत्यय विशेष रूप के साथ लग कर मुख्य संज्ञा या कर्ता के साथ संबंध जोड़ता है। यह परिवर्तनशील भी है।

शब्द		प्रत्यय		संबंधवाचक शब्द		मुख्य शब्द
हम	+	रा	=	हमारा	-	घर
उस	+	का	=	उसका	-	घर
आप	+	ना	=	अपना	-	घर

परिभाषा -

1. ''यदि कारक चिह्न का क्रिया से सीधा संबंध हो तो वह संबंध विभक्ति कहलाते हैं।''
2. ''जब संबंधी के बारे में विशेष कहना हो तो संबंधवान (भेदक) के साथ जो प्रत्यय लगता है, उसे संबंध कहते हैं।''

संबंध प्रत्यय का प्रयोग -

संबंध प्रत्यय का हिंदी भाषा में व्यापक रूप प्रयोग होते हैं। लिंग वचन के आधार पर इसका परिवर्तन होता है। इसका मुख्य कार्य संबंध जोड़ना है, लेकिन केवल मूल संज्ञा या कर्ता के साथ। जैसे —

मेरे भाई का लड़का आ रहा है।

उनके घर के सामने मेरी बहन की लड़की रहती है।

ऊपर के वाक्यों में मेरे का संबंध भाई से, भाई का संबंध लड़के से जोड़ने वाले प्रत्यय क्रमश: 'रे' और 'का' है। इसी प्रकार दूसरे वाक्य में के-के, री-की प्रत्यय भी क्रमश: उन + घर; घर + सामने; में + बहन; बहन + लड़की को आपसी संबंध जोड़ रहे हैं।

मूल संबंध-प्रत्यय तीन हैं-

का = उसका-राम का = 'का' का प्रयोग सर्वनाम के तृतीय पुरुष और संज्ञाओं के साथ होता है।

रा = मेरा-हमारा-तेरा तुम्हारा = 'रा' का प्रयोग सर्वनाम के प्रथम और दूसरे पुरुष में होता है।

ना = अपना, = 'आ' का प्रयोग निजवाचक सर्वनाम के साथ होता है।

का-रा-ना लिंग वचन के अनुसार क्रमश: के = की, रा = रे, ने = नी, हो जाते हैं। जैसे —

उमेश का भाई मेरा भाई अपना भाई

उमेश की बहन   मेरी बहन   अपनी बहन

उमेश के रुपये   मेरे रुपये   अपने रुपये

संबंध प्रत्यय के विभिन्न प्रयोग –

1. अभेदवाचक शब्दों में – (का)
   क्रिकेट का खेल
   फुटबॉल का खेल
   सरसों का तेल
2. अंग–अंगी भाव में – (का)
   बच्चे की आँख
   ,सर के बाल
   सौ पृष्ठों की कविता
3. जन्य–जनक भाव में – (क)
   मेरी माँ
   मेरे पिता
   मंत्री का बेटा
4. कर्ता कर्म भाव में – (का)
   शंकरदेव का कीर्तन घोषा
   कहानी का लेखक
5. सेव्य–सेवक भाव में – (का)
   मालिक का नौकर
   मेरी नौकरानी
6. गुण–गुणी भाव मैं – (का)
   चीनी की f
   नींबू की खटास
7. नाते–रिस्ते में –(का)
   मेरा भाई
   पत्नी का भाई
8. मोल वस्तु में – (का)
   चार रुपये में आम
   कपड़े का दाम
9. परिमाण वाचक में – (का)
   पाँच मीटर की साड़ी
   चार हाथ का पट्टा

10. काल-वयस में - (का)

चार वर्ष का लड़का

एक दिन की बात

11. देशांतर और रूपांतर में - (का)

रंक का राजा

तिल का ताड़

कुछ का कुछ होना

12. विभिन्न कारकों के साथ

कर्ता - मेरे जाने पर

कर्म - गाँव की फूट

करण - चक्की का पिसा

अपादान - जेल का भागा

अधिकरण - पहाड़ की चढ़ाई (आदि)

अभ्यास

1. प्रत्यय किसे कहते हैं ?
2. प्रत्यय कितने प्रकार के हैं ?
3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' या 'नहीं' लगा कर दो-

(अ) क्या कारक और विभक्ति एक ही है ?

(आ) क्या विभक्तियाँ विकारी प्रत्यय के अंग हैं ?

(इ) क्या का-रा-ना संबंध प्रत्यय है ?

(ई) क्या क्रिया के साथ लगने वाले प्रत्ययों का तद्धित कहते हैं ?

(उ) क्या संज्ञा सर्वनाम के साथ लगने वाले प्रत्यय कृदंत कहलाते हैं ?

4. रिक्त स्थानों में सही शब्द लिखो -

(अ) संज्ञा या सर्वनाम के साथ लगने वाले प्रत्यय ..... कहलाते हैं। (कृदंत, विभक्ति, तद्धित, कारक)

(आ) विभक्ति ..... प्रत्यय। (कारक, विकारी, अविकारी)

(इ) संबंध वाचक प्रत्यय ..... होता है। (अपरिवर्तनशील, परिवर्तनशील)

(ई) संबंध प्रत्यय का क्षेत्र ..... है। (संकुचित, सीमित, व्यापक)

5. निम्नलिखित प्रत्ययों के नाम बताओ।

ने, कर, अन, याँ, एँ, से, में, का, रा, पर, के, लिए, ना, परा, रहा, है, या।

क्रिया के काल

काल —

'काल' का अर्थ है समय। क्रिया के रूप से क्रिया-व्यवहार के समय का बोध होता है, उसे काल कहते हैं।

काल के प्रकार -

मोहन विद्यालय जाता है।

नीलू विद्यालय जाती है।

गिरीश चिड़ियाघर गया।

सीता चिड़ियाघर गई।

राधिका स्कूल जाएगी।

ऊपर के वाक्यों में जाता है, जाती है, गया, गई, जाएगी क्रमश: वर्तमान काल, भूत काल और भविष्यत् काल की क्रियाएँ हैं। काल तीन प्रकार के होते हैं -

(अ) वर्तमान काल (आ) भविष्यत् काल (इ) भूत काल।

वर्तमान काल —

बिमल बिहु गीत गाता है।
कमला गा रही है।
नरेन घर जाता होगा।

ऊपर के वाक्यों में गाता है, गा रही है और जाता होगा क्रिया रूप कार्य के वर्तमान समय में होने का बोध कराते हैं। इस प्रकार क्रिया के जिस रूप से कार्य का वर्तमान समय में होना प्रकट हो, उसे वर्तमान काल कहते हैं। वर्तमान काल के तीन भेद हैं -

1. सामान्य वर्तमान
2. तात्कालिक या अपूर्ण वर्तमान
3. संदिग्ध वर्तमान

1. सामान्य वर्तमान -

राम गीत गाता है।

राधा गाती है।

यदु और मधु गीत गाते हैं।

वर्तमान में ऊपर के बड़े शब्दों से क्रियाओं के कार्य आरंभ होने का बोध होता है। अत: क्रिया के उस रूप को सामान्य वर्तमान काल कहते हैं, जिससे कार्य के आरंभ करने के साथ ही होने का बोध होता है।

2. तात्कालिक या अपूर्ण वर्तमान -

लड़का **पढ़ रहा है**।

जॉन और थॉमस **पढ़ रहे हैं**।

गीता **पढ़ रही है**।

बड़े अक्षरों वाले क्रिया-रूपों से कार्य का वर्तमान में चलते रहने का बोध होता है। अतएव क्रिया के उस रूप को तात्कालिक वर्तमान कहते हैं, जिससे यह ज्ञात होता है कि कार्य वर्तमान में हो रहा है।

3. **संदिग्ध वर्तमान** -

लड़का **पढ़ता होगा**।

लड़के **पढ़ते होंगे**।

लड़की **पढ़ती होगी**।

बड़े अक्षरों के शब्दों से क्रियाओं के प्रयोग में क्रियाओं का कार्य वर्तमान काल में चलते रहने का बोध होता है, परंतु वह अनिश्चित है। ऐसी क्रियाओं के काल को संदिग्ध वर्तमान काल कहते हैं।

4. **भविष्यत् काल** -

आदमी घर **जाएगा**।

लड़के घर **जाएँगे**।

लड़की घर **जाएगी**।

बड़े अक्षरों वाली ऊपर की क्रियाएँ भविष्य में होने का संकेत करती हैं। क्रिया के जिस रूप से कार्य के भविष्य में होने का बोध होता है, उसे भविष्यत् काल की क्रिया कहते हैं।

भविष्यत् काल की क्रियाएँ दो प्रकार की हैं -

1. सामान्य भविष्यत्
2. संभाव्य भविष्यत्

1. **सामान्य भविष्यत्**

रेखा कल नगाँव **जाएगी**।

मोहन विद्यालय **जाएगा**।

लड़के पाठ **पढ़ेंगे**।

बड़े शब्दों से क्रिया रूपों से आने वाले समय में होने की सामान्य सूचना मिलती है। इस प्रकार की क्रिया को सामान्य भविष्यत् कहते हैं, जिससे आगे कार्य होने का सामान्य संकेत मिलता है।

2. **संभाव्य भविष्यत्**

गुरुजी आ **जाएँ**।

मैं चला **जाऊँ**।

लड़की आ **जाए**।

बड़े अक्षरों वाली क्रियाएँ भविष्य में कार्य के होने की संभावना मात्र का बोध कराती है। अत: ऐसी क्रियाओं को संभाव्य भविष्यत् की क्रियाएँ कहते हैं।

भूत काल

हमने भात **खाया**।

लड़का **पढ़ता था**।

लड़की ने पाठ **पढ़ा है**।

लड़का **गया होता** तो जल्दी **आया होता**।

हम पढ़ **चुके थे**।

लड़की ने रोटियाँ **खायीं**।

बड़े अक्षरों वाली क्रियाएँ बीते हुए समय में होने के बोध करती हैं। अत: क्रिया के जिस रूप से कार्य का बीते हुए समय में हो का बोध होता है, उसे भूत काल कहते हैं।

भूत काल छः प्रकार के होते हैं-

1. सामान्य भूत
2. आसन्न भूत
3. संदिग्ध भूत
4. पूर्ण भूत
5. अपूर्ण या तात्कालिक भूत
6. हेतुहेतु मद् भूत

1. सामान्य भूत

लड़का घर **चला**।

गीता ने पाठ **पढ़ा**।

बड़े अक्षरों वाली क्रियाओं से कार्य की समाप्ति का ज्ञान सामान्य रूप से होता है। अत: क्रिया के उस रूप को सामान्य भूतकाल कहते हैं, जिससे कार्य का सामान्य रूप से समाप्त हो जाने का बोध होता है।

2. आसन्न भूत

बालक ने पाठ पढ़ा है।

आदमी उठा है।

उपर्युक्त क्रिया रूपों से कार्य के अभी-अभी समाप्त होने का बोध होता है। इसलिए क्रिया के रूप को आसन्न भूत कहते हैं, जिनसे कार्य तुरंत समाप्त होने का ज्ञान होता है।

3. संदिग्ध भूत

गोपाल घर गया होगा।

लड़की ने भात खाया होगा।

बालक ने पुस्तक पढ़ी होगी।

उपर्युक्त क्रिया-रूपों में कार्य का भूतकाल में समाप्त होने का संदिग्ध बोध होता है। अत: क्रिया के जिस रूप से कार्य का भूत काल में होने में संदेह हो, उसे संदिग्ध भूत काल कहते हैं।

4. पूर्ण भूत

लड़का **आया था**।

लड़की **आयी थी**।

बालक ने रोटी **खायी थी**।

बड़े अक्षरों वाले क्रिया-रूपों से कार्य के भूतकाल में ही समाप्त होने का बोध होता है। इसी प्रकार क्रिया के भूत काल में समाप्त होने का बोध हो, उसी भूत कहते हैं।

5. अपूर्ण भूत

बालक **पढ़ रहा था**।

लड़के **खेल रहे थे**।

लड़की **जा रही थी**।

बड़े अक्षरों वाले क्रिया-रूपों से कार्य भूत काल में समाप्त होने का बोध नहीं होता, अपितु कार्य अनवरत चलते रहने का भाव स्पष्ट होता है। अत: क्रिया के जिस रूप से उनके व्यापार का भूत में समाप्त न होकर चलते रहने का भाव मिले, उसे अपूर्ण भूत कहते हैं।

अपूर्ण भूत के अन्य रूप इस प्रकार हैं -

आदमी बचपन में खेलता था।

राजा दशरथ आखेट खेलते थे।

6. **हेतु हेतु मद् भूत**

आप **आते** तो हम **जाते**।

उमानंद तक पुल **होता**, तो हम रोज **जाते**।

मीनू **पढ़ती** तो जरूर उतीर्ण **होती**।

बड़े अक्षरों वाले क्रिया-रूपों से यह बोध होता है कि क्रिया का कार्य भूत काल में ही समाप्त हो जाता, परंतु कुछ कारणवश अपूर्ण रहा।

इसी प्रकार -

आप चलते, तो मैं जाता।

परिश्रम करते, तो फल मिलता।

क्रिया-प्रत्ययों से काल की पहचान -

साधारणत: काल के अनुसार क्रियाओं में प्रत्यय निम्न प्रकार लगते हैं। जैसे -

'पढ़ना' क्रिया

काल	**काल के उपभाग**	**क्रिया**	**काल-प्रत्यय**
भूतकाल	सामान्य भूत	पढ़ा, पढ़ी, पढ़े	पढ़ + आ-ई-ए
	आसन्न भूत	पढ़ लिया है।	पढ़ + लिया है-
		चुका है	ली हैं-लिये हैं, चुका है-चुकी है-चुके हैं
	अपूर्ण भूत	पढ़ रहा था	पढ़ + रहा था-रही थी- रहे थे, पढ़ + आ + था
	पूर्ण भूत	पढ़ा था	(पढ़ + चुका + था) पढ़ी थी, पढ़े थे, पढ़ी थी
भूतकाल	संदिग्ध भूत	पढ़ लिया होगा	पढ़ + लिया + होगा, पढ़ ली होगी-लिए होंगे
	हेतुहेतुमद् भूत	आप आते तो मैं आता!	यदि आते + तो आता।
		आप पढ़ते	आती, आते (पढ़ते + तो मैं पढ़ता ती + पढ़ता)
वर्तमान काल	सामान्य वर्तमान	पढ़ता है	पढ़ ती + पढ़ता) ता है- ती है-ते हैं
	अपूर्ण वर्तमान	पढ़ रही हूँ	पढ़ + रहा हूँ, रही हूँ, रहे हैं, रही हैं
	संदिग्ध वर्तमान	पढ़ता होगा	पढ़ + ता + होगा (ते होगे, ती + होगी (होंगी)
भविष्यत् काल	सामान्य भविष्यत्	पढ़ूँगा	पढ़ + ऊँगा-ऊँगी
	सांभाव्य भविष्यत्	शायद पढ़ूँगा	एँगे, एँगी
		शायद पढ़ूँ	शायद पढ़ + ए
	हेतुहेतुमद भविष्यत्	आप पढ़ेंगे तो मैं पढ़ूँगा	पढ़ + ऊँ
			पढ़ेंगे तो पढ़ूँगा (पढ़ेंगी, पढ़ेंगे)

अभ्यास

1. 'काल' किसे कहते हैं ?
2. काल कितने प्रकार के होते हैं ?
3. नीचे लिखी क्रियाओं के काल बताओ।

   पढ़ता है, पढ़ेगा, पढ़ता होगा, पढ़ा था।
4. नीचे लिखी क्रिया-प्रत्ययों को अपने वाक्यों में प्रयोग करो —

   (अ) ता, है, ती, है, रही, है, ता होगा।

   (आ) ऊँगा, एँगी, ऊँ, ओ, एँ।

   (इ) ता, था, इ, थी, रही थी, या था, चुका था।

वाच्य

जितेंद्र कोकोकोला पीता है।

रमेश से कोकोकोला नहीं पिया जाता।

सीता से चला नहीं जाता।

प्रथम वाक्य की क्रिया 'पीता है' कर्ता जितेंद्र के अनुसार है। द्वितीय वाक्य की क्रिया 'पिया जाता' कर्म 'कोकोकोला' के अनुसार है और तृतीय वाक्य की क्रिया चला जाता = कर्ता-कर्म से अलग अर्थात स्वतंत्र है।

''क्रिया के जिस रूपांतर से यह जाना जाए कि वाक्य में क्रिया द्वारा किए गये विधान (कही गई बात) का विषय कर्ता है अथवा कर्म है या भाव है, उसे वाच्य कहते हैं।''

वाच्य के प्रकार -

वाच्य तीन प्रकार के होते हैं।

(अ) कर्तृवाच्य, (आ) कर्मवाच्य, (इ) भाववाच्य

(अ) कर्तृवाच्य

आनंदराम नामघोषा पढ़ता है।

दुर्गेश्वरी पिताजी को बुलाती है।

गीता फुलमाला पहनती है।

अब्दुल्ला और सुलेमान रोटी खाते हैं।

पढ़ता है, बुलाती है, पहनाती हैं, खाते हैं - क्रियाएँ लिंग, वचन के अनुसार क्रमशः कर्ता आनंदराम, दुर्गेश्वरी, गीता, अब्दुल्ला और सुलेमान का अनुकरण कर रही हैं। इस प्रकार क्रिया का रूप हमेशा कर्ता के अनुसार ही रहता है।

जिस क्रिया का संबंध सीधा कर्ता से हो, याने कर्ता ही प्रमुख उसे कर्तृवाच्य कहते हैं।

1. कर्तृवाच्य सकर्मक-अकर्मक दोनों प्रकार की क्रियाओं में होता है।

जैसे - सीता फल खाती है।

सीता नहाती है।

2. कर्तृवाच्य का प्रयोग भविष्यत काल में होता है। जैसे-

माताजी भात खाएँगी।

गुरुजी हिंदी पढ़ाएँगे।

वाच्य में प्रयोग -

कर्तृवाच्य में क्रिया के तीन प्रकार के प्रयोग होते हैं-

1. कर्तरि प्रयोग 2. कर्मनि प्रयोग 3. भावे प्रयोग

1. कर्तरि प्रयोग

रमेश बाजार गया।

माधव खाना खाता है।

सीता किताब पढ़ेगी।

ऊपर के कर्तृवाच्य के वाक्यों में गया, खाता है, पढ़ेगी क्रियाएँ कर्ता के अनुसार हैं। अत: यहाँ कर्तरि प्रयोग हुआ है।

2. कर्मनि प्रयोग

रमेश ने खाना खाया।

सीता ने पत्र लिखा।

ऊपर के कर्तृवाच्य वाक्यों में खाया और लिखा क्रिया, क्रमश: 'खाना' और 'पत्र' के अनुसार है। अत: यहाँ कर्तृवाच्य में कर्मनि प्रयोग हुआ है।

3. भावे प्रयोग

रमेश ने खाया।

ऊपर के कर्तृवाच्य के वाक्य में 'खाया' और 'लिखा' क्रिया कर्ता के अनुसार न होकर स्वतंत्र है। अत: यहाँ कर्तृवाच्य में 'भावे प्रयोग' हुआ है।

(अ) कर्मवाच्य

चंद्रकांत से पुस्तक पढ़ी जाती है।

ऊपर के वाक्य में क्रिया रूप 'पढ़ी जाती है' कर्म पुस्तक के अनुसार है। इस प्रकार के क्रिया रूप को, जिसमें कर्म ही प्रमुख हो, कर्म वाच्य कहते हैं। कर्मवाच्य में क्रिया की गति लिंग, वचन आदि वाच्य में प्रयुक्त मुख्य कर्म के अनुसार होती है।

कर्मवाच्य में कर्म का उल्लेख होने पर कर्मनि प्रयोग होता है तथा कर्म का उल्लेख न होने पर भावे प्रयोग होता है। जैसे-

सीता से किताब नहीं पढ़ी गई।

सीता से पढ़ नहीं गया।

राम से रोटी नहीं खाई गई।

राम से खाया नहीं गया।

कर्मवाच्य का प्रयोग -

1. सकर्मक क्रिया का ही कर्मवाच्य होता है। (अकर्मक क्रियाओं की कर्मवाच्य नहीं होता) कर्मवाच्य के साथ वाच्य में कर्ता के साथ 'से' 'के द्वारा' विभक्यिाँ रहती हैं।

उदाहरण –

कर्तृवाच्य	**कर्मवाच्य**
पिताजी ने पुस्तक पढ़ी थी।	पिताजी से पुस्तक पढ़ी गई थी।
रघुनाथ ने जलेबी खाई थी।	रघुनाथ से जलेबी खाई गई थी।
शायद विमला ने हिंदी पढ़ी थी।	शायद विमला से हिंदी पढ़ी गई थी।

2. वर्तमान काल की सकर्मक क्रिया का कर्ता जब क्रिया करने में आशक्त हो जाए, ऐसी अवस्था में क्रिया कर्म के अनुसार हो जाती है। जैसे –

गणेश से सब्जी नहीं खाई जाती।

बच्ची से पाठ नहीं पढ़ा जाता।

3. कभी-कभी कर्मवाच्य में कर्ता का उल्लेख नहीं होता। जैसे-

पुस्तक काफी पढ़ी गई।

चिट्ठी लिखी गई।

भाववाच्य

वाक्य में अकर्मक क्रिया की गति व रूप जब कर्ता के अनुसार न हो, यानि क्रिया या भाव ही प्रमुख हो, तब भाववाच्य होता है।

बालक से चला नहीं जाता।

बालिका से चला नहीं जाता।

बालक और बालिका से चला नहीं जाता।

'चला नहीं जाता' पर कर्ता में लिंग, वचन का कोई प्रभाव नहीं पड़ा है बल्कि इसमें केवल भाव यानि क्रिया की प्रधानता है। इसलिए इसको भाववाच्य कहा जाता है।

हिंदी में भाववाच्य का प्रयोग ज्यादातर निषेध या असमर्थता सूचक अर्थ में होता है।

वाच्य परिवर्तन

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य और कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य होता है। कर्तृवाच्य से भाववाच्य भी होता है, परंतु कर्मवाच्य से भाववाच्य में परिवर्तन नहीं होता। जैसे-

कर्तृवाच्य	**कर्मवाच्य**
हम पुस्तक पढ़ते हैं।	हमसे पुस्तक पढ़ी जाती है।
मैं भात खाऊँगा।	मुझसे भात खाया जाएगा।
राम ने काम किया।	राम से काम किया गया।

कर्तृवाच्य	**भाववाच्य**
सीता दौड़ती है।	सीता से दौड़ा जाता है।
लड़का नहीं गया।	लड़के से जाया नहीं गया।
रोगी नहीं उठा।	रोगी से उठा नहीं गया।

अभ्यास

1. वाच्य किसे कहते हैं ?
2. वाच्य कितने प्रकार के होते हैं ?
3. नीचे लिखे कर्तृवाच्य के वाक्यों को कर्मवाच्य में बदलो –

   (अ) गैंडा घास खाता है।

   (आ) मैं कटहल नहीं खा सकता।

   (इ) महेश ने चाय पी।

   (ई) पीताजी ने पत्र लिखा।
4. नीचे लिखे कर्तृवाच्य के वाक्यों को भाववाच्य में बदलो –

   हम खेलते हैं।

   सीता नहीं नहाती।

   महाराणा दौड़ता है।

   नथुनी नहीं सोता।

उपसर्ग

शब्द के पूर्व जोड़ कर नये शब्द बनाने वाले अक्षर या अक्षरसमूह को उपसर्ग कहते हैं।

उपसर्ग के प्रकार –

भाषा के आधार पर हिंदी में तीन प्रकार के उपसर्ग होते हैं।

1. संस्कृत के उपसर्ग
2. उर्दू के उपसर्ग
3. हिंदी के अपने उपसर्ग

संस्कृत के उपसर्ग

उपसर्ग	उपसर्ग का अर्थ	उपसर्ग से बने शब्द
अति	बहुत, अधिक	अतिवृष्टि, अत्यधिक
अधि	अधिक, श्रेष्ठ	अधिमास, अधिकार
अनु	साथ, पीछे	अनुकरण, अनुचर, अनुगामी
अप	बुरा, रहित	अपमान, अपशय, अपशब्द
अभि	ऊपर, श्रेष्ठ	अभ्युदय, अभिषेक, अभिवादन

अव,	हीन, नीचे, कभी	अवगुण, अवतार, अवमूल्यन
आ	की ओर, विलोम, तक	आकाश, आदान, आजन्म
उत्	ऊपर, विकाश	उत्कर्ष, उत्साह
उप	सामीप्य, अधीन	उपकार, उपराष्ट्रपति, उपदेश
दुः (दूर)	बुरा, कठिन	दुर्भिक्ष, दुरात्मा, दुर्गति, दुर्गम
नि	निम्नता, भरपूर	निग्रह, निमग्न, नियम
निर	निषेध	निर्मोही, निराकार, निर्भय
परा	दूर, पीछे	परिक्रमा, पराधीन, पराभय
परि	चारों ओर	परिक्रमा, परिचर्चा, परिधान
प्र	आगे, बाहर, ऊँचा	प्रगति, प्रस्थान, प्राचार्य
प्रति	की ओर, विरुद्ध, हर एक	प्रतिनिधि, प्रतिकार, प्रतिदिन
वि	पृथक, उल्टा, परिवर्तन	वियोग, विक्रय, विकार
सम्	साथ, पूर्णता, सामीप्य	संभाषण, संताप, समर्थ, संस्थान
सु	सुंदर, सहज	सुदर्शन, सुयोग्य, सुलभ

उर्दू के उपसर्ग

उपसर्ग	उपसर्ग का अर्थ	उपसर्ग से बने शब्द
अल	पूर्ण, अत्यंत	अलमस्त, अलविदा
ऐन	ठीक	ऐनवक्त, ऐनमौका
कम	थोड़ा, रहित	कमजोर, कमअक्ल
शुक	अच्छा, शुभ	खुशनसीब, खुशखबरी
गैर	निषेध, विरुद्ध	गैरहाजिर, गैरकानूनी
दर	में	दरअसल, दरमियान
ना	अभाव	नामुमकिन, नगवार
फी	प्रति	फी-सदी, फी-आदमी
ब	के साथ	बदस्तूर
बद	बुरा	बदमिजाज, बदबू
बर	ऊपर	बरकरार, बरदाश्त
बा	अनुसार	बाकायदा, बाअदब
बिला	बिना	बिलाशक
बे	रहित	बेईमान, बेअदब, बेकार

ला	रहित	लाजवाब, लापरवाह
सर	मुख्य	सरकार, सरताज, सरदार, सरहद
हम	साथ, समान	हमसफर, हमदम, हमदर्द
हर	प्रत्येक	हरदम, हर बार

हिंदी के अपने उपसर्ग

उपसर्ग	**उपसर्ग के अर्थ**	**उपसर्ग से बने शब्द**
अ, अन	अभाव	अलग, अथाह, अनमेल
अध	आधा	अधपका, अधमरा
उ	अलग	उचक्का, उजागर, उजाड़
उन	एक कम	उत्रीस, उनतीस
औ	हीन	औगुण, औधड़
दु	खराब, हीन	दुकाल, दुबला
नि	रहित	निडर, निधड़क, निकम्मा
बिन	निषेध, अभाव	बिन कारण, बिन देखा
भर	पूरा, सारा	भरपूर, भरदिन, भरपेट
सु, स	उत्तम	सुकाज, सुबोल, सपूत, सगुन
कु, क	खराब	कुकर्म, कुसंगत, कपूत

उपर्युक्त उपसर्गों का हिंदी में प्रयोग होता है। इसलिए इनके बारे में जानकारी रखना आवश्यक है। जैसे-

रमेश का **अनुकरण** नहीं करना चाहिए, क्योंकि वह **बेईमान** और **कुकर्मी** लड़का है।

दरअसल सलीम **खुशमिजाज**, **निष्कपट**, **सपूत** है।

ऊपर के वाक्यों में बड़े अक्षर वाले शब्दों में उपसर्ग लगे हैं।

उपसर्ग हमेशा मूल शब्द के पूर्व में लगते हैं और मूल शब्द के अर्थ को भी बदल देते हैं।

अभ्यास

1. उपसर्ग किसे कहते हैं ?
2. हिंदी में किस-किस भाषा के उपसर्ग हैं ?
3. निम्नलिखित उपसर्गों से शब्द बनाओ।

   बद, बे, उन, भर, अप, दूर्, प्रति, हर, प्र, ऐन, गैर, कम, हम, सर, फी, उत्।
4. नीचे लिखे शब्दों से उपसर्ग अलद करो -

   आजन्म, अवगत, निष्काम, निरादर, सुयोग्य, वाकायदा, हर, बार, लापरवाह, सरकार, दुबला, उजाड़, अथाह।

पद-व्याख्या

वाक्य में प्रयुक्त शब्दों को पद कहते हैं। इन पदों का रूप और आपसी संबंध जानने के लिए उनकी व्याख्या करना जरूरी होता है। इससे हम प्रत्येक पद का अर्थ और उसकी स्थिति को अच्छी तरह जान सकते हैं।

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया-विशेषण, समुच्चयबोधक, संबंधसूचक विस्मयादिबोधक इन सभी पदों के प्रकार-लिंग, वचन, काल, पुरुष, कारक, वाच्य आदि की जानकारी पद-व्याख्या से मिल जाती है। जैसे -

वाक्य - ''मैंने भात खाया''

पद - मैंने-भात-खाया

पद-व्याख्या

मैंने - सर्वनाम, प्रथम पुरुष, एकवचन, प्रधान कर्ता कारक 'खाया क्रिया' का।

भात - संज्ञा, जातिवाचक, पुंलिंग, एकवचन, निर्विभक्तिक, कर्म कारक, 'खाया क्रिया' से अधिकृत।

खाया - क्रिया, सकर्मक, कर्मवाच्य, भात, कर्म, पर अधिकार भूतकालिक। ऊपर की पद व्याख्या से हमें वाक्य के सभी पदों का ठीक-ठीक ज्ञान हो गया। पद-व्याख्या के ही अन्य प्रचलित नाम हैं-पद-निर्देश, पद-परिचय, पद-विन्यास, पद-विच्छेद, पदान्वय, शब्दान्वय आदि।

''वाक्यगत पदों के रूप और परंपरा संबंध बनाने को पद-निर्देश कहते हैं।''

अभ्यास

1. पद-व्याख्या का क्या अर्थ है ?
2. पद-व्याख्या से क्या लाभ है ?
3. पद-व्याख्या के अन्य नाम कौन-कौन से हैं ?
4. नीचे लिखे हुए वाक्य के पदों की व्याख्या करो -
   रामनाथ भला आदमी है।
   डंबरू दत्त हिंदी खूब बोलता है।